International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(II), April - June, 2021, pp.114-118

प्राचीन काल में धर्म आधारित शिक्षा

विशाल काटिया*

प्रस्तावना

भारत का इतिहास और संस्कृति दोनों अत्यंत प्राचीन है। भारत का इतिहास प्राचीन होने के कारण विश्व के इतिहास में अपना अहम स्थान रखता है। भारत के सांस्कृतिक विकास की यात्रा भी प्राचीन रही है। प्राचीन भारत का गौरवपूर्ण इतिहास विभिन्न कालों के घटनाओं का सच्चा वृतांत है भारत की प्राचीन संस्कृति का इतिहास भी अत्यंत गौरवशाली रहा है। विश्व में भारत की संस्कृति ने अपनी अनुपम विशेषताओं के कारण आदर पूर्ण स्थान प्राप्त किया है संपूर्ण जगत के कल्याण एवं विश्व बंधुत्व जैसे उदार सिद्धांतों के कारण ही विश्व की सभी संस्कृतियों में भारत की संस्कृति अग्रणी रहने के साथ ही जीवित रूप में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। विश्व की अन्य संस्कृतियों का पतन हो चुका है किंतु भारतीय संस्कृति वर्तमान समय में भी धर्म और दर्शन के कारण अपने जीवंत रूप में आज भी संपूर्ण मानव जगत के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रही है। भारत के धर्म एवं दर्शन पर आधारित यह संस्कृति सबके लिए प्रतिमान स्वरूप है ऐसी गौरवपूर्ण संस्कृति का अध्ययन करना समस्त भारतीयों के लिए गौरव का विषय है।

भारतीय संस्कृति और धर्म

- संस्कृति और सभ्यता दोनों एक दूसरे की पूरक होती है। एक दूसरे के बिना दोनों के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संस्कृति शब्द से किसी भी विशिष्ट भूखंड की मानसिक क्षमता एवं प्रकृति का एक दीर्घकालीन इतिहास प्रकट होता है । व्यक्ति के मन शरीर तथा आत्मा से संबंधित नैसर्गिक शक्तियां संस्कृति से ही परिवर्तित और परिमार्जित होती है। मन एवं आत्मा की तृप्ति के लिए मनुष्य जो विकास और उन्नति करता है वह समग्र रूप से संस्कृति के अंतर्गत आता है। संस्कृति में मानव की सभी कलाओं ज्ञान विज्ञानों तथा विभिन्न सामाजिक प्रथाओं को संस्कृति में संलग्न किया जा सकता है। सामान्यतः सभ्यता और संस्कृति शब्दों का अर्थ प्राय समान अर्थ में किया जाता है। लेकिन दोनों शब्दों का अलग–अलग अर्थ है।जहां संस्कृति का संबंध आत्मा से है वही सभ्यता का संबंध व्यक्ति के बाह्य आवरण से है ।सामान्यतः सभ्यता से तात्पर्य मनुष्य की उपलब्धियों से होता है मनुष्य ने देश एवं कॉल में विश्व के धरातल पर मन से सोच कर जो कर्म किया है जो भौतिक उपलब्धि उसने प्राप्त की है। सभ्यता उन सभी कि एक सामान्य संज्ञा है भारतीय संस्कृति और सभ्यता दोनों का संबंध अटूट है। और इन दोनों का आधार धर्म रहा है । संस्कृति धर्म प्रधान एवं आध्यात्मिक होने के कारण दार्शनिक आवरण से आवृत हो गई है।
- संस्कृति को भिन्न–भिन्न साहित्यकारों ने अपने अपने शब्दों में निम्न परिभाषा से परिभाषित किया गया है।

* सहायक आचार्य, इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, उनियारा, राजस्थान।

टी एच ग्रीन के अनुसार

- संस्कृति ज्ञान ,व्यवहार ,विश्वास की उन आदर्श पद्धतियों को कथा ज्ञान व्यवहार से उत्पन्न साधनों की व्यवस्था को जो कि समय के साथ परिवर्तित होती है कहते हैं। यह पद्धतियां सामाजिक रुप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती है।
- इसी प्रकार प्रसिद्ध समाजशास्त्री जिलीन महोदय के संस्कृति को निम्न शब्दों में परिभाषित किया है।
- प्रत्येक समूह तथा समाज में आंतरिक एवं बाह्य व्यवहार के ऐसे प्रतिमान होते हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित होते हैं। तथा बच्चों को सिखाएं जाते, जिनमें निरंतर परिवर्तन की संभावना रहती है ।
- उपरोक्त परिभाषा में उपयुक्त सभी विद्वानों ने संस्कृति को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। उनके चिंतन में भिन्नता है,इसका मूल कारण विभिन्न प्रकार का दृष्टिकोण है।इतिहासकार ,साहित्यकार , समाजशास्त्री, भिन्न–भिन्न दृष्टि से संस्कृति को देखते हैं।
- किसी भी देश राष्ट्र एवं समाज का अध्ययन संस्कृति और सभ्यताको इतिहास से ही जाना जा सकता है। सभ्यता और संस्कृति को जानने एवं समझने के लिए उस देश के पुरातात्विक, साहित्यिक साधनों का होना नितांत आवश्यक है। इन दोनों साधनों के अभाव में किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विषय में जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती।भारत की संस्कृति और सभ्यता को पुरातात्विक एवं साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर ही समझ कर साहित्यकारों एवं इतिहासकारों ने भारत देश का गौरवपूर्ण इतिहास लिखने का पुनीत कार्य किया।
- भारत के समृद्ध इतिहास को जानने के लिए पुरातात्विक अवशेष साहित्य व विदेशी प्रमाण उपलब्ध हैं। जिससे भारत की विशाल संस्कृति के समाज, धर्म दर्शन, राजनीति, आर्थिक संपन्नता, को जान गया है।भारत की भूमि ने कई संस्कृतियों को आश्रय भी दिया यहीं पर संस्कृतियों का विकास हुआ और यहीं पर उनका पतन भी हुआ। संस्कृतियों के विकास और पतन के पुख्ता प्रमाण भारत की धरा पर आज भी मौजूद है।जिनके आधार पर यहां की संस्कृतियों का हम अध्ययन प्राचीन भारत के इतिहास के अंतर्गत करते हैं।

पाषाण काल शिक्षा और धर्म

- भारत के इतिहास का प्रारंभ तो मानव उत्पत्ति के साथ ही जुड़ा हुआ है। मानव ने जब धरती पर जन्म लिया और प्रकृति से संघर्ष कर वह असभ्य से सभ्य मानव बना ,यह मानव विकास की लंबी गाथा है। आदि काल से नवपाषाण काल तक सभ्यता का इतिहास बड़ा रोचक है। अग्नि की खोज हथियारों का प्रयोग, कृषि एवं पशुपालन,साथ ही अनाज को संग्रह करने की प्रवृत्ति, समूह में रहने की प्रवृत्ति, पहिए का आविष्कार, आवासों का निर्माण, यह सभी उपलब्धियां मानव के बौद्धिक विकास का परिणाम है।
- मानव के विकास के इस इतिहास में हम समाज, धर्म ,शिक्षा, दर्शन, राजनीति इत्यादि का अध्ययन भी करते हैं। जब मनुष्य ने भाषा का प्रयोग करना सीखा अपने विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त किया, तब जाकर हमें उसके धार्मिक सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त संभव हो सकी।
- यद्यपि पाषाण काल के आदिमानव के कई पुरातात्विक प्रमाण शैल चित्रों के रूप में प्राप्त होते हैं। जिसमें उसके द्वारा पत्थरों पर बनाए गए चित्रों से उसकी आस्थाओं का भान होता है। यह कॉल मानव का आरंभिक काल था। इस कॉल में मानव प्रकृति से संघर्ष कर रहा था सघुमंतू जीवन में उदर पूर्ति करना ही उसका मुख्य कार्य था। भाषा ज्ञान के अभाव में वह पूर्णरूप से असभ्य था इसी कारण हमें पाषाण कालीन मानव के जीवन के बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती संभवत शिक्षा एवं धर्म के विषय में हम इस काल में को अधूरा ही मानते हैं।

ताम्र पाषाण काल शिक्षा और धर्म

- नवपाषाण काल के अंत में धातु का प्रयोग आरंभ हुआ, इस चरण में पत्थर के औजारों के साथ तांबे के औजारों का प्रयोग मानव करने लगा था। इसी कारण इस काल को ताम्र पाषाण काल कहा जाता है। ताम्र पाषाण युग की संस्कृति के पुरातात्विक अवशेष भारत एवं भारत के बाहर भी प्राप्त होते है। ताम्र पाषाण संस्कृति के लोग अपने मकान मिट्टी ,घास फूस, बांस बल्ली आदि की सहायता से निर्मित करते थे। ताम्र पाषाण युग के पुरातात्विक अवशेष मूर्तियों,बर्तनो व अन्य कई रूपों में प्राप्त होते हैं। जिनके आधार पर ताम्र पाषाण संस्कृति के लोगों के धर्म, समाज,शिक्षा,इत्यादि विविध पक्षों पर जानकारी प्राप्त होती है। नवपाषाण काल व ताम्र पाषाण काल मैं मानव सभ्य बन गया था। अपने बौद्धिक विकास के कारण धर्म और शिक्षा से इसका संबंध इन कालों मैं किसी न किसी रूप में रहा था।

सिंधु संस्कृति शिक्षा और धर्म

- इसी प्रकार प्राचीन भारत की सिंधु संस्कृति जो कि एक नगरीय संस्कृति थी। सिंधु संस्कृति के संदर्भ में भी कई पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त होते हैं, जिनके आधार पर सिंधु संस्कृति की भाषा, लिपि ,धर्म–दर्शन , शिक्षा इत्यादि की जानकारी प्राप्त होती है। सिंधु वासियों के कई पुरातात्विक प्रमाण नगरों,भवनों, मूर्तियों, मोहरों,बर्तनों,आभूषणों इत्यादि कई रूपों में प्राप्त होते हैं। जिनके आधार पर उन लोगों के सामाजिक धार्मिक, राजनीतिक,एवं आर्थिक जीवन के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- सिंधु वासियों द्वारा बर्तनों एवं मोहर पर विभिन्न प्रकार के चित्र जिनमें उन लोगों की धार्मिक विश्वास की सजीव झांकी प्रस्तुत होती है, वस्तुतः यहीं से प्राचीन भारत की समृद्ध संस्कृति का अध्याय प्रारंभ होता है। उन लोगों का धार्मिक एवं सामाजिक विश्वास क्या रहा उनकी धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताएं क्या रही उनका समाज कैसा था ? उनकी धार्मिक आस्था का स्वरूप कैसा था? इन सभी का उत्तर लिपि के पढ़े नहीं जाने के कारण सिंधु संस्कृति के संपूर्ण इतिहास को नहीं जाना जा सकता। किंतु प्राप्त पुरातात्विक प्रमाण के आधार पर उनके धर्म एवं दर्शन एवं शिक्षा से उनका संबंध इन सभी पर महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती है। पाषाण कालीन संस्कृति के रूप में सिंधु संस्कृति का उद्भव हुआ और यही इस का पतन हुआ था। भारत के कई समृद्ध प्रदेशों में और भारत के बाहर भी इस प्राचीन संस्कृति के पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- जिनके आधार पर इस संस्कृति की विशालता को मापा गया है। सिंधु लिपि के 400 अक्षर मिले हैं,जो चित्र के रूप में हैं।किंतु लिपि को ना समझने के कारण उनके संबंध में पूर्ण जानकारी का अभाव है। निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि सिंधु समाज में शिक्षा का प्रचलन हो चुका था । किंतु प्राप्त प्रमाणों को न समझे जाने के कारण शिक्षा के स्वरूप भाषा एवं लिपि को जानना संभव नहीं हो सका है। किंतु यह बात तो सत्य है की उनकी शिक्षा में, उनकी भाषा में,उनकी लिपि में, धार्मिक तत्व की प्रधानता थी। यहीं से प्राचीन भारत के धर्म एवं दर्शन, शिक्षा, राजनीति एवं सामाजिकता का अध्याय प्रारंभ होता है।

वैदिक सभ्यता धर्म और शिक्षा

- सेंधव संस्कृति के पतन के उपरांत आर्यों द्वारा स्थापित की गई आर्य संस्कृति जिसका स्वरूप ग्रामीण था। आर्यों ने 1500 ईसा पूर्व में गंगा नदी के मुहाने पर आर्य सभ्यता को स्थापित किया था।अपौरुषेय रूप में माने जाने वाले वेदों के आधार पर इस संस्कृति के विशद रूप को पहचानना संभव हो सका।
- यद्यपि आर्यों की यह संस्कृति ग्रामीण स्वरूप में स्थापित थी। वैदिक ग्रंथों, पुराणों, महाकाव्य, एवं अन्य पौराणिक ग्रंथ इस संस्कृति के विषय में सारगर्भित जानकारियां देते हैं। वैदिक आर्यों की भाषा संस्कृत थी, और संस्कृत भाषा में ही शिक्षा का विकास हुआ था। वैदिक ग्रंथों में जो मंत्र लिखे गए हैं ,उनकी भाषा संस्कृत थी। वैदिक परंपरा में शिक्षा का स्वरूप संस्कृत भाषा में, श्रुति परंपरा पर आधारित था। गुरु शिष्य परंपरा की शुरुआत गुरुकुल में गुरु द्वारा शिष्यों को दी जाने वाली धर्म आधारित शिक्षा से वैदिक धर्म एवं शिक्षा की जानकारी प्राप्त होती है।

- वेद, उपनिषद, पुराण व कई पौराणिक ग्रंथ जिससे हमें वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। वैदिक सभ्यता को जानने का मुख्य स्त्रोत वेद हैं। वेदों से ही वैदिक आर्यों के सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक आर्थिक पक्ष की जानकारी प्राप्त होती है। वैदिक समाज चार वर्णों में विभाजित था। पहला ब्राह्मण दूसरा क्षत्रिय तीसरा वैश्य और चौथा शुद्र वर्ण था ।
- इन चारों वर्णों की उत्पत्ति का सिद्धांत वेदों में देखने को मिलता हैस विराट पुरुष से चारों वर्णों की उत्पत्ति मानी गई थी, और इनके कर्म भी निश्चित किए गए थेस ब्राहमण का कार्य शिक्षा देना दान देना दान, क्षत्रिय का कार्य प्रजा की रक्षा, वैश्य वर्ण का कार्य कृषि पशुपालन व्यापार वाणिज्य करना, शुद्र वर्ण का कार्य उपरोक्त तीनों वर्णों की सेवा करना था स
- ऋग्वेद में वशिष्ठ, विश्वामित्र, आदि पुरोहितों के नाम मिलते हैं जिन्होंने धार्मिक शिक्षा देकर वैदिक समाज का मार्ग प्रशस्त किया किया था। वैदिक काल के लोगों का धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, एवं आर्थिक जीवन धर्म से परिपूर्ण था। ब्राह्मणों का कार्य शिक्षा देना गुरुकुल मैं शिष्यों को विविध प्रकार की शिक्षा देना, यज्ञ करना, हवन, दान देना एवं दान लेना था। समाज कि इस बौद्धिक वर्ग ने धार्मिक शिक्षा देकर समाज की व्यवस्थाओं को बनाए रखने में अपना अमूल्य योगदान दिया था। राजा का कर्तव्य निर्धारित करना लोक कल्याण की भावना से उसे कार्य करवाना जो की संपूर्ण प्रजा के लिए कल्याणकारी था। राजा भी पुरोहित द्वारा दी गई धार्मिक शिक्षाओं की उनके आदेशों की विधिवत पालना करते थे। धर्म के आधार पर शासन किया करते थे धर्म से विमुख होने पर प्रजा को राजा को पद से हटाने का भी विधान था। समाज को आर्थिक मजबूती देने के लिए तीसरा वैश्य वर्ण जिसका कार्य व्यापार एवं वाणिज्य करना और शुद्र वर्ण का कार्य उपरोक्त तीनों की सेवा करना था। वैदिक समाज में के प्रारंभिक स्वरूप में जाति व्यवस्था नहीं थी। वर्णों के कर्म बदले जा सकते थे। कालांतर में आगे चलकर यह वर्ण व्यवस्था समाज में जाति व्यवस्था के रूप में स्थापित हुई, और वर्णों के कर्म जातिगत रूप में निश्चित हो गएस इस प्रकार प्रारंभिक वैदिक समाज में शिक्षा कर्म आधारित थी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शुद्र अपने अपने कर्म के आधार पर समाज को गति दे रहे थे सवैदिक शिक्षा ,सैन्य शिक्षा, व्यापारिक शिक्षा, व्यवसायिक, कृषि शिक्षा के द्वारा सभी वर्ण कार्य कर रहे थे।
- इस प्रकार वैदिक काल में जो शिक्षा का स्वरूप देखने को मिलता है वह धर्म आधारित था। प्राचीन भारत में विभिन्न धर्म एवं संप्रदायों का उदय हुआ जिनमें वैदिक धर्म,जैन धर्म,बौद्ध धर्म, इन सभी धर्मो के धर्मगुरुओं द्वारा अपने अपने धर्म शिक्षकों ने धार्मिक सिद्धांतो का प्रचार प्रसार संस्कृत,हिंदी पाली, प्राकृत, कई भाषाओं में किया। परस्पर इन धर्मों के मध्य सिद्धांतों को लेकर तनातनी भी रही, एक के विरोध में दूसरे के सुधार का मार्ग प्रशस्त हुआ। वैदिक धर्म एवं कर्मकांड का विरोध जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म द्वारा किया गया। सामाजिक चिंतकों ने इस अवसर का लाभ उठाकर एकेश्वरवाद का नारा देते हुए समाज को संगठित करने का प्रयास किया सकालांतर में इस प्रकार के कई धार्मिक आंदोलन हुए जिनसे मानव कल्याण जगत कल्याण की भावना से लोग जुड़ते गए, यह इसी का परिणाम था कि भारतीय समाज विखंडित होने से बचा रहा।

वैदिक कालीन शिक्षा

- वैदिक काल में संस्कृत भाषा का विकास हो चुका था। वेदों की रचना संस्कृत भाषा में की गई। इस समय देवताओं की स्तुति के लिए मंत्र गाए जाते थे। वेदों में मंत्र मिलते हैं, जो उनके धार्मिक जीवन ,राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन,एवं आर्थिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। आचार्यों का निवास आश्रम हुआ करता थे इन आश्रमों में ऋषि मुनि छात्रों को वैदिक शास्त्रीय शिक्षा दिया करते थे। लेखन कला का विकास नहीं होने के कारण शिक्षा के लिए श्रुति परंपरा अस्तित्व में थी। इस काल में मंत्रों को कंठस्थ किया जाता था शिष्य गुरु द्वारा बताए गए मंत्रों को कंठस्थ कर गुरु को सुनाया करते थे। शिक्षा का मौखिक विधान था। छात्र गुरुओं के अनुशासन में गुरु आश्रम में

रहा करते थे। गुरु द्वारा बताए गए कर्तव्यों का शिष्य विधिवत रूप से पालन किया करते थे। गुरु आश्रम के नियमों का शिष्यों को पालन करना होता था। छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरु विभिन्न प्रकार की शिक्षा दिया करते थे। छात्रों के नैतिक, मानसिक,और शारीरिक विकास पर पर्याप्त रूप से ध्यान दिया जाता था। ऋग्वेद मैं विभिन्न प्रकार के मंत्र विभिन्न देवताओं को समर्पिथ थे। जिनके माध्यम से शिष्य गुरुओं के सानिध्य में यज्ञ, हवन, इत्यादि किया करते थे। आर्यों का लोक परलोक में विश्वास था। इस प्रकार वैदिक काल में सामूहिक शिक्षा की अपेक्षा व्यक्तिगत शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। संपूर्ण वैदिक काल में शिक्षा धर्म आधारित थी।

- इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा का आधार धर्म था। शिक्षा मैं धर्म का होना व्यक्ति के आंतरिक गुणों का विकास करना ही शिक्षा का परम लक्ष्य था। धर्म का अभिप्राय कोई संप्रदाय नहीं था। धर्म अनुशासन के वे नैतिक नियम होते थे, जिनका पालन कर व्यक्ति अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता था। भारतीय संस्कृति और सभ्यता में धर्म आधारित शिक्षा का स्वरूप चार आश्रम, षोडश संस्कार, चार पुरुषार्थ, जैसी विशेषताओं और गुणों पर आधारित था। जिसमें स्वयं और जगत के कल्याण की भावना निहित थी। इन विशेष गुणों के कारण ही समाज की व्यवस्थाओं को बनाए रखने में धार्मिक शिक्षा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इसी कारण भारत की सभ्यता और संस्कृति वर्तमान समय में भी अपने मूल रूप में विद्यमान हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारत में पाषाण काल से लेकर नवपाषाण काल, वैदिक काल तक मानव के बौद्धिक विकास की क्रियाकलापों के आधार पर शिक्षा के प्राचीन स्वरूप को जो धर्म पर आधारित था। उसे समझने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्राचीन भारत का इतिहास केसी श्रीवास्तव
2. प्राचीन भारत का इतिहास डॉ विपिन कुमार मिश्रा
3. विश्व की प्राचीन सभ्यताएं श्री राम गोयल
4. भारत का इतिहास शर्मा एवं व्यास
5. भारत का इतिहास डॉक्टर कृष्ण चंद्र माथुर
6. प्राचीन भारत स्पेक्ट्रम गाइड

❖◆❖